गीतावली ॥

گیتاولي

गोसाईंतुलसीदासकृत

जो

अनेक रागों में सुन्दर बालचरित्रादि सम्पूर्ण लीलायुक्त और यथाविधि बोधके अर्थ पद बिभाग करके सुवाच्य वर्णोंमें वर्णित है

तीसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेखानेमें छपी

दिसम्बर सन् १८८२ ई०

श्रीगणेशायनमः ॥

गीतावली ॥

गोसाईंतुलसीदासकृत ॥

बालकाण्ड ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगंसीतासमारोपितबामभागं पा
णौमहाशायकचारुचापंनमामिरामंरघुवंशनाथम् १ ॥ रागआसावरी ॥
आजुसुदिनशुभघरीसुहाई रूपशीलगुणधामरामनृपभवनप्रगट
भेआई अतिपुनीतमधुमासलग्नग्रहवारयोगसमुदाई हर्षवन्त
चरअचरभूमितरुतनुरुहपुलकजनाई बर्षहिंबिबुधनिकरकुसुमा
वलिनभदुन्दुभीबजाई कौशल्यादिमातुमनहर्षितयहसुखबरणि
नजाई सुनिदशरथसुतजन्मलियोसबगुरुजनबिप्रबुलाई वेदबि
हितकरिक्रियापरमशुचिआनँदउरनसमाई सदनवेदधुनिकरत
मधुरमुनिबहुबिधिबाजबधाई पुरबासिनप्रियनाथहेतुनिजनिज
सम्पदालुटाई मणिमयतोरणकेतुपताकनपुरीरुचिरकरिछाई मा
गधसूतद्वारबन्दीजनजहँतहँकरतबड़ाई सहजशृँगारकियेबनि
ताचलिमङ्गलबिपुलबनाई गावहिंदेहिंअशीशमुदितचिरजिवो
तनयसुखदाई बीथिनकुंकुमकीचअरगजाअगरअबीरउड़ाई नाच
हिंपुरनरनारिप्रेमभरिदेहदशाबिसराई अमितधेनुगजतुरँगबस
नमणिजातरूपअधिकाई देतभूपअनुरूपजाहिज्वइ सकलसिद्धि
गृहआई सुखीभयेसुरसन्तभूमिसुर खलगणमनमलिनाई सबैसु
मनविकशतरहैंनिकसतकुमुदबिपिनबिलखाई जोसुखसिन्धुसु
कृतसीकरतेशिवबिरञ्चिप्रभुताई स्वइसुखअवधउमांगरहदशदि

बिहँगपतिकीन्हीप्रबललराई भेबिनुपंखरामिलिसुधिदैतुलसी सुगतिबनाई ३ रघुपतिकपिपतिभेटभईकरिदृढ़प्रीतिबालिबधि सुखलैपठईकपिकटकई सिंधुनिकटसंपातिसमागमहनुमतलंकल ई सीतादरशदाहिहाटकपुरसबसुधिप्रभुहिदई शिषदेलैअवमान बिभीषणतुलसीशरणठई ४ रघुपतिसेतबँधायोसागरबालिसुपूत दूतपठयोलखिबलबुधिनीतिउजागर कोकहिअंगदक्योंआयोहि तपितुतबहोकोगागर सुनतहँस्योनसह्योपदरोप्योटरयोनगोलघु तागर रावणसभातेजलैतुलसीआइजुहारयोनागर ५ खेलतबस न्तकपियातुधानलरिगिरतदोउदोउजीतिमान मेघनादकरिशक्ति तानलखिलषणविकलभेहरिनिदान भेसचेतहत्योताहिआनकुंभ करणमर्योरामबान आयोबीरदशाननबलअमानबहुखेलखेलाये रामजान दशदशशिरडारेबिशिखभान बरषिसुमनसुरकरैंगान मिलितुलसीभुजापतिसुजान ६ रघुपतिसमुझिभरतबिकुलाई बेगिबिमानसाजिसहमित्रनिचलेअवधनियराई पवनकुमारजाइ सुधिदीन्हीमिलेआइसबभाई सुखीमातुपुरजनगुरुबेगिहिंराज तिलकसुखपाई तुलसीमंगलमुदितसकलजगसुबसबसेरघुराई इतिसंक्षेपगीतावलीसमाप्तः ॥

दोहा ॥

तुलसीकृतगीतावली रामायणसुखरास ॥
गावैंसुनैंसोसुखलहैं हियकेसकलहुलास १
अनुजसहितरघुनाथसिय मंगलमूरतिख्यात ॥
सुमिरतजनसङ्कटहरत गावतहरिपुरजात २